

घरेलू कामगारों का शोषण

प्रलिस के लयि:

[भारत का सर्वोच्च नयायालय, देखभाल अर्थव्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय शर्म संगठन, सामाजिक सुरक्षा संहति, 2020](#)

मेन्स के लयि:

भारत में घरेलू कामगार, शर्म कानून और सुधार, कल्याण और संरक्षण

[स्रोत: द हट्टि](#)

चर्चा में क्यों?

भारत के सर्वोच्च नयायालय (SC) ने सुरक्षात्मक कानूनी ढाँचे के अभाव के कारण भारत में घरेलू कामगारों के शोषण और दुरव्यवहार पर चर्चा जताई है।

- इसने केंद्र को सुरक्षात्मक कानून की आवश्यकता का आकलन करने के लयि एक अंतर-मंत्रालयी वशिषज्ज समति गठति करने का नरिदेश दयिा है।

घरेलू कामगार कौन हैं?

- [अंतरराष्ट्रीय शर्म संगठन](#) के अनुसार, घरेलू कामगार वे कामगार हैं जो कसिी नजी घर या घरों में या उनके लयि कार्य करते हैं।
 - वे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष देखभाल सेवाएँ प्रदान करते हैं, तथा इस प्रकार वे देखभाल अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण हसिसा हैं।
- भारत में घरेलू कामगारों की स्थति: वर्ष 2019 के सरकारी अनुमान के अनुसार, भारत में घरेलू कामगारों में अधकिांश हसिसा महिलाओं का है अर्थात् कुल 39 लाख शर्मकिों में से 26 लाख महिलाएँ हैं।
 - 12.6 मलियन नाबालगि घरेलू कामगार के रूप में कार्यरत हैं (86% लडकयिाँ हैं, तथा 25% 14 वर्ष से कम उमर के हैं)।
- घरेलू कामगारों की वशिषताएँ:
 - अनौपचारिक और अनयिमति: अधकिांश घरेलू कामगारों के पास रोजगार अनुबंध, सामाजिक सुरक्षा और कानूनी संरक्षण का अभाव है।
 - लवि-इन और अंशकालिक कार्य: कुछ शर्मकि अपने नयिकता के साथ रहते हैं (लवि-इन शर्मकि), जबकि अन्य कई घरों में काम करते हैं (अंशकालिक शर्मकि)।
- प्रवासन: घरेलू कामगार अक्सर अत्यधिक गरीबी और रोजगार के अवसरों की कमी के कारण झारखंड, बहार और ओडशिया जैसे गरीबी से ग्रस्त राज्यों से दलिली, बंगलुरु और मुंबई जैसे शहरों के साथ-साथ अरब राज्यों की ओर पलायन करते हैं।
 - हाशयि पर पड़े समुदाय: कार्यबल मुख्य रूप से अनुसूचति जाति(SC), अन्य पछिडा वर्ग (OBC) और अनुसूचति जनजाति(ST) के हाशयि पर पड़े समुदायों से बना है।

भारत में घरेलू कामगारों की चर्चाएँ क्या हैं?

- कम वेतन: बहुत से लोग न्यूनतम वेतन से कम कमाते हैं, उनके पास कोई औपचारिक अनुबंध नहीं होता। वे अक्सर बनिा बरेक या ओवरटाइम वेतन के अत्यधिक घंटे कार्य करते हैं।
- दुरव्यवहार: शर्मकिों को शारीरिक और भावनात्मक दुरव्यवहार का सामना करना पडता है, जसिमें वशिष रूप से कमजोर समुदायों के नाबालगिों में, मारपीट, कठोर परस्थितियिाँ, यौन उत्पीडन, जबरन शर्म और मानव तस्करी शामिल है।
 - अंतरराष्ट्रीय शर्म संगठन ने घरेलू कार्य को एक "आधुनिक दासता" प्रथा बताया है जहाँ नाबालगिों के साथ ही शर्मकि दुरव्यवहार, शोषण, जबरन शर्म और तस्करी के प्रती संवेदनशील होते हैं।
- यौन उत्पीडन: महिला कर्मचारी यौन शोषण का शकिार हो जाती हैं। प्रतशिोध के डर या कानूनी उपाय की कमी के कारण दुरव्यवहार के कई मामले दर्ज नहीं कएि जाते हैं।

- **एजेंसियों द्वारा शोषण:** प्लेसमेंट एजेंसियों उचित मजदूरी या सुरक्षा स्थितिकी गारंटी दिये बिना **रोज़गार के लिये उच्च शुल्क** वसूल कर घरेलू श्रमिकों का शोषण करती हैं।
 - श्रमिकों को अक्सर उनके रोज़गार की शर्तों (जिनमें वेतन या नौकरी की ज़िम्मेदारियाँ शामिल हैं) के बारे में जानकारी नहीं दी जाती है।
- **महामारी: कोविड-19** से स्थिति और भी खराब हुई। वर्ष 2020 के एक अध्ययन में पाया गया है कि कोच्चा, दिल्ली और मुंबई में 57% घरेलू कामगारों को भेदभाव का सामना करना पड़ा, जबकि 40% ने सुरक्षा उपायों के बिना कार्य किया।

भारत में घरेलू कार्य कौन से कानूनों द्वारा नियंत्रित होते हैं?

- **कोई समरपति केन्द्रीय कानून नहीं:** घरेलू कामगारों को मुख्यधारा के श्रम कानूनों से बाहर रखा गया है क्योंकि "कर्मचारी" और "कार्यस्थल" की परिभाषाएँ घरेलू कार्य को कवर नहीं करती हैं, जैसे अक्सर "अनुत्पादक" महिला श्रम के रूप में देखा जाता है।
 - घरेलू कामगारों की सुरक्षा के लिये केन्द्रीय कानून पारित करने के क्रम में कई प्रयास किए गए, जिनमें **घरेलू कामगार (रोज़गार की शर्तों) विधियक 1959** और **घरेलू कामगार (कार्य का वनियमन और सामाजिक सुरक्षा) विधियक 2017** शामिल हैं।
 - वर्ष 2019 की **राष्ट्रीय घरेलू कर्मचारी नीति** का उद्देश्य संबंधित एजेंसियों को वनियमित करना और मजदूरों के अधिकारों को सुनिश्चित करना था जिसमें मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा और लाभ शामिल हैं। हालाँकि, इनमें से कोई भी प्रस्तावित कानून लागू नहीं किया गया।
- **कमज़ोर वधिक सुरक्षा:**
 - असंगत क्षेत्र सामाजिक सुरक्षा अधिनियम, 2008: इसके तहत कुछ लाभ प्रदान किए गए लेकिन बाद में इसे **सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020** द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया, जैसे लागू नहीं किया गया है।
 - न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, 1948: इसके तहत घरेलू कार्य को मान्यता दी गई है लेकिन केवल 10 राज्यों ने घरेलू श्रमिकों के लिये न्यूनतम मजदूरी निर्धारित की है।
 - कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न अधिनियम, 2013: इसके तहत घरेलू कामगारों को शामिल किया गया है लेकिन इसमें प्रवर्तन तंत्र का अभाव है।
- **बालक श्रम (प्रतिषेध और वनियमन) अधिनियम, 1986:** वर्ष 2006 में भारत ने 14 वर्ष से कम आयु के नाबालगों के घरेलू कार्य नियोजन पर प्रतिबंध लगा दिया था, क्योंकि इसे "परसिंकटमय बालक श्रम" माना गया था, लेकिन **बालक श्रम अधिनियम, 1986**, के तहत 14 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों को घरों में काम करने की अनुमति है, क्योंकि इसे "सुरक्षा" स्थान माना जाता है।
- **राज्य कानून: तमिलनाडु, महाराष्ट्र और केरल** ने घरेलू कामगारों की सुरक्षा के हेतु कानून लागू किये हैं।
 - इन राज्यों ने सामाजिक सुरक्षा लाभ, मातृत्व देखभाल, शिक्षा सहायता, चिकित्सा प्रतिपूर्ता और न्यूनतम पारिश्रमिक की देखरेख के लिये विशेष निकाय स्थापित किये हैं।
- **वैश्विक सुरक्षा: वर्ष 2011 में, भारत ने ILO अभिसमय 189** के पक्ष में मतदान किया, जिसका उद्देश्य घरेलू कार्य को वधिसिगत कार्य के रूप में मान्यता देकर घरेलू कामगारों की स्थिति में सुधार करना है, ताकि घरेलू कामगारों को अन्य लोगों के समान अधिकार प्राप्त हों **हालाँकि, भारत द्वारा इस अभिसमय का अनुसमर्थन किया जाना बाकी है।**

//

Core Conventions of the ILO: - The eight Core Conventions of the ILO (also called fundamental/human rights conventions) are:

- Forced Labour Convention (No. 29)
- Abolition of Forced Labour Convention (No.105)
- Equal Remuneration Convention (No.100)
- Discrimination (Employment Occupation) Convention (No.111)
- Minimum Age Convention (No.138)
- Worst forms of Child Labour Convention (No.182)

(The above Six have been ratified by India)

- Freedom of Association and Protection of Right to Organised Convention (No.87)
- Right to Organise and Collective Bargaining Convention (No.98)

(The above two conventions have not been ratified by India)

आगे की राह

- **नीतगित परिवर्तन:** नियोजन एजेंसियों को वनियमित करने, उचित वेतन और लाभ के साथ अनविरय अनुबंध सुनिश्चित करने तथा सामाजिक सुरक्षा एवं पेंशन योजनाओं में घरेलू श्रमिकों को शामिल करने के लिये **मसौदा राष्ट्रीय घरेलू कामगार नीति, 2019** का क्रियान्वन किया जाना चाहिये।
 - **ILO अभिसमय 189** का अनुसमर्थन करने, घरेलू कामगारों के अधिकारों की रक्षा के लिये वधि निर्माण करने, उनके कार्य को वधिसिगत मानने एवं वधिक संरक्षण व नीति परिवर्तन सुनिश्चित किया जाना चाहिये।
- **तस्करी वरिधी नीतियाँ: पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिये नियोजन एजेंसियों** का पंजीकरण अनविरय किया जाना चाहिए, इसके अतिरिक्त, **भारतीय न्याय संहिता, 2023** के तहत तस्करी वरिधी कानूनों का कड़ाई से प्रवर्तन सुनिश्चित करने की आवश्यकता है, जिसमें घरेलू कामगारों से जुड़े अपराधों सहित तस्करी के अपराधों के लिये **आजीवन कारावास** के दंड का प्रावधान किया गया है।
- **श्रमिकों का सशक्तीकरण:** घरेलू श्रमिकों के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाने, वधिक सहायता और सामाजिक सेवाओं तक पहुँच प्रदान करने

तथा शिकायतों के समाधान के लिये एक वैधानिक निकाय की स्थापना की जानी चाहिये।

????? ???? ????:

प्रश्न. भारत में घरेलू कामगारों के शोषण का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिये तथा उनकी कार्य स्थितियों और सामाजिक सुरक्षा में सुधार के उपायों का सुझाव दीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

?????:

प्रश्न. 'देखभाल अर्थव्यवस्था' और 'मुद्रीकृत अर्थव्यवस्था' के बीच अंतर कीजिये। महिला सशक्तीकरण के द्वारा देखभाल अर्थव्यवस्था को मुद्रीकृत अर्थव्यवस्था में कैसे लाया जा सकता है? (2023)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/exploitation-of-domestic-workers>

